Paper - epigraphy paleography and chronology

SEM. 4th

Topic: History of epigraphical studies in India (भारत में अभिलेखों के अध्ययन का इतिहास)

पूर्व कक्षाओं में हमने अभिलेखों के प्रकार, उनका महत्व, भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में अभिलेखों की भूमिका, प्राचीन लेखों के अध्ययन में विभिन्न विद्वानों का योगदान आदि विषयों का अध्ययन किया है। अब हम भारतवर्ष में अभिलेखों का अध्ययन कब से प्रारंभ हुआ और किन-किन विद्वानों ने कब-कब कौन-कौन से अभिलेखों का उद्वाचन किया इस विषय का अध्ययन करेंगे।

यूं तो भारतवर्ष में अभिलेखों के अध्ययन के संदर्भ में प्राचीन काल से ही प्रयास होते रहे हैं। दिल्ली में 1356 ईस्वी में फिरोजशाह तुगलक द्वारा टोपरा एवं मेरठ से 2 स्तंभों को लाया गया तथा उन्हें क्रमशः कोटला एवं कुशक शिकार के निकट खड़ा करवाया गया। इन स्तंभों पर लिखे लेखों को जानने के लिए अनेक विद्वानों से संपर्क किया गया पर कोई भी उन्हें पढ़ने में समर्थ नहीं हो सका। परवर्ती काल में इन स्तंभों पर लिखे लेखों को जानने की जिज्ञासाा के फलस्वरूप ऐसा ही प्रयास अकबर के द्वारा भी किया गया। पुनः इस दिशा में प्रयास अंग्रेजी राज्य स्थापित होने के पश्चात आरंभ हुआ। ब्रिटिश शासन काल में विभिन्न विद्वानों के द्वारा उत्खनन से प्राप्त अभिलेखों, गुहालेखों, स्तंभलेखों, शिलालेखों, प्राचीन सिक्कों, मूर्तियों आदि पर उत्कीर्ण लेखों तथा स्तूप आदि पर उत्कीर्ण लेखों को पढ़ने का प्रयास व्यक्तिगत रूप से किया गया। इन विभिन्न विद्वानों ने न केवल अभिलेखों का अध्ययन किया अपितु प्राचीन समय में प्रचलित लिपि जिसमें यह लेख उत्कीर्ण थे उसकी संपूर्ण वर्णमाला तैयार करने का श्रेय भी इन विद्वानों के प्रयासों को जाता है। अभिलेखों के अध्ययन की दिशा में विभिन्न विद्वानों ने अपना सार्थक योगदान दिया तथापि यह समाज के सम्मुख प्रकाश में ना आ सके। इसका एक महत्वपूर्ण कारण यह था कि इनके द्वारा किए गए अध्ययन व्यक्तिगत रूप से किए गए थे और ये सभी विद्वान एक दूसरेे के द्वारा किए गए कार्यों एवं प्रयत्नों से अनभिज्ञ थे। इसका परिणाम यह हुआ कि इस क्षेत्र में अध्ययन तो निरंतर होते रहे परंतु अन्य लोगों तक वह जानकारी न पहुंच सकी जिसके कारण प्राचीन भारतीय इतिहास का एक कालखंड जिसके संबंध में इन अभिलेखों से जानकारी प्राप्त होती थी वह भी अंधकार के गर्त में ही समाहित रहा जब तक इन अभिलेखों से प्राप्त जानकारी प्रकाश में नहीं आई थी। अतः इन अभिलेखों के अध्ययन की दिशा में हो रहेेे प्रयासों को एक मंच पर साझा करने की आवश्यकताअनुभव होने लगी। अंततः 1784 इसवी में सर विलियम जोंस की प्रेरणा से एशियाटिक

सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना कलकत्ता में हुई। इसकी स्थापना का मुख्य लक्ष्य शिलालेखों के साथ साथ साथ ताम्रपत्र सिक्कों का अध्ययन करना तथा उनसे इतिहास भूगोल आर्थिक सामाजिक एवं राजनैतिक तथा धार्मिक स्थितियों का ज्ञान और विभिन्न विचारधाराओंं को स्पषट करना था। इसी संदर्भ्भ मेंसर्वप्रथम प्राचीन लेखन पद्धतियों का अध्ययन आरंभ हुआ। एशियाटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल की स्थापना के पश्चात अभिलेखों को उनके वास्तविक रूप में अध्ययन का कार्य प्रारंभ किया गया। अभिलेखों के क्षेत्र में हुए मुख्य अध्ययन इस प्रकार हैं-

क्रम संख्या - वर्ष - अध्ययनकर्ता - लेख एवं कार्य

1) 1785 - चार्ल्स विलकिंस - पालनरेश नारायण पाल की बादल स्तंभ प्रशस्ति का पाठन।

2) 1785 - राधाकांत शर्मा - अशोक के स्तंभ पर उत्कीर्ण चाहमान नरेश बीसलदेव के अभिलेख का अध्ययन।

3) 1785 - जे.एच. हैरिंगटन - नागार्जुनी और बराबर गुहा से मौखरी नरेश अनंतवर्मन की 3 लेखों की खोज।

4) 1785 से 1789 - चार्ल्स विलकिंस - नागार्जुनी और बराबर गुहा से प्राप्त समस्त अभिलेखों का वाचन।

5) 1795 - चार्ल्स मैलेट - एलोरा की गुफाओं से छोटे-छोटे अभिलेखों की छाप तैयार की और पढ़ने के लिए विलियम जॉन्स के पास भेजा।

विलफर्ड ने विलियम जॉन्स से प्राप्त अभिलेखों की छाप को एक पंडित की सहायता से पढ़ा और विलियम जॉन्स को वापिस भेजा। इस पाठन की अशुद्धि पर काफी समय तक शंका नहीं हुई।

6) 1818 से 1823 - जेम्स टॉड - राजस्थान मध्य भारत एवं गुजरात से अभिलेखों को एकत्र एवं संग्रह किया।

7) 1818 से 1823 - यति ज्ञान चंद्र - जेम्स टॉड द्वारा संग्रहित अनेक अभिलेखों को पढ़ा। इनके अनुवाद एवं सारांश को जेम्स टॉड ने अपनी पुस्तक 'राजस्थान' में प्रयोग किया।

8) 1828 से 1833 - चार्ल्स वॉल्टर इलियट- कन्नड वर्णमाला का विस्तृत चार्ट तैयार किया।

9) 1830 से 1840 - बैबिंग्टन - ममल्लपुरम से प्राप्त संस्कृत एवं तमिल अभिलेखों के आधार पर वर्णमाला तैयार की।

10) 1834 - ट्रायर - समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तंभ लेख को आंशिक रूप से पढ़ा।

11) 1834 - मिल - समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तंभ लेख को पूर्ण रूप से पढ़ लिया।

12) 1835 -वॉथन - बल्लभी नरेश की अनेक दान पत्रों को पढ़ा।

13) 1837 - मिल - स्कंद गुप्त के अभिलेखों को पढ़ा।

14) 1837 - प्रिंसेस - सांची के स्तूप के निकट प्राप्त लेखों से अशोक कालीन ब्राह्मी लिपि को स्पष्ट किया।

15) 1837 - हार्कनेस - दक्षिण भारत में प्रचलित प्राचीन एवं आधुनिक भारतीय भाषाओं की वर्णमाला तैयार की।

16) 1837-1838 - प्रिंसेस - 528 ईसा पूर्व से 1200 तक की वर्णमाला तैयार की। इसमें अट्ठारह सौ वर्षों में आए भारतीय लिपि में परिवर्तनों का तुलनात्मक चार्ट तैयार किया।

17) 1874 - बर्नेल - चतुर्थ से चौहदवीं शताब्दी ईस्वी तक के अभिलेखों पर आधारित 'एलिमेंट्स ऑफ साउथ इंडियन पैलियोग्राफी' प्रस्तुत की।

18) 1877 - कनिंघम - अशोक के अभिलेखों पर आधारित 'कार्पस इनस्क्रिप्शनम इंडिकेरम' (प्रथम अंक) प्रकाशित किया।

19) 1878 - जॉन फैथफुल फ्लिट - गुप्त एवं समकालीन नरेशों के अभिलेखों के आधार पर 'कार्पस इनस्क्रिप्शनम इंडिकेरम' (तृतीय अंक) का प्रकाशन किया।

20) 1894 - गौरीशंकर हीराचंद ओझा - हाथ से बनी वर्णों की प्रतिलिपि युक्त प्राचीन लिपि माला का प्रकाशन किया।

21) 1896 - ब्यूलर- वर्णों की प्रतिलिपि के चार्ट इंडियन पैलियोग्राफ में प्रकाशित किए।

22) 1896 - हुल्त्ज - लिपियों के क्षेत्रीय विभाजन का विश्लेषण किया।

अभिलेखों के पाठन के पश्चात उनका प्रकाशन भी विभिन्न पद्धतियों से किया गया। इस दृष्टि से कार्पस इनस्क्रिप्शनम इंडिकेरम के विभिन्न अंक का प्रकाशन हुआ जिनका विवरण इस प्रकार है-

हुल्त्ज (प्रथमभाग) -अशोक के अभिलेख।

स्टेन कोनो (द्वितीय भाग) - खरोष्ठी में लिखित अभिलेख।

जॉन फैथफुल फ्लिट -गुप्त नरेश एवं उनके समकालीन नरेश ओं के अभिलेख।

वी.वी. मिराशी (2 भाग) - कलचुरी शासकों एवं चेदी संवत के अभिलेख।

वी.वी. मिराशी - वाकाटक शासकों के अभिलेख एवं सिलहर नरेशों के अभिलेख।

एच.वी. त्रिवेदी (भाग 1) - परमार, चंदेल, विजयपाल, यज्ञपाल नरेशों का राजनीतिक इतिहास।

एच.वी. त्रिवेदी (भाग दो) - मालव के परमार, चंद्रवती, बगड और जतौर के अभिलेख।

एच.वी. त्रिवेदी (भाग 3) - विंध्य प्रदेश के चंदेल, ग्वालियर के कच्छपघाट, विजयपाल राजवंश, नरवार के यज्ञपाल के अभिलेख एवं अन्य अभिलेख।

इस प्रकार स्पष्ट है कि बाद में राजवंशों तथा क्षेत्र विशेष से संबंधित अभिलेखों के अध्ययन की परंपरा भी चल पड़ी और इस आधार पर भी अनेक प्रकाशन हुए। भारतीय पुरातत्व विभाग ने 38 अंकों में एपीग्राफिया इंडिका में संस्कृत में उत्कीर्ण अभिलेखों का प्रकाशन किया जिसका लक्ष्य समय क्षेत्र राजवंश इत्यादि से हटकर मात्र अभिलेखों का विशद अध्ययन का संकलन था। इसी प्रकार साउथ इंडियन इनस्क्रिप्शंस का भी 20 अंकों में संकलन प्रकाशित हुआ।

Lecture by Ritu Mishra

Department of Sanskrit